इकाई - III Date - 07.06.2020

Topic - भाषा के आधारभूत कौशलों - पढ़ने का विकास।

Ans- लिखित सामग्री को उच्चारित करने की क्षमता वाचन कहलाती है, परंतु पढ़ने में अर्थग्रहण पर बल दिया जाता है। प्राथमिक स्तर से ही पठन कौशल सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि अधिकतर शिक्षण पाठ्यपुस्तकों द्वारा प्रारम्भ हो जाता है। इस कौशल के विकास हेतु बहुत सी चीजों पर ध्यान दिया जाता है, जैसे - शुद्ध उच्चारण, ध्वनियों की सही पहचान; शब्द भण्डार में वृद्धि, विराम उच्चारण में सही प्रयोग, उचित बल, लय एवं गति के साथ पठन और पढ़ी गई वस्तु के अर्थ ग्रहण की क्षमता का विकास।

पढ़ना एक सार्थक, उद्देश्यपूर्ण एवं चिंतन प्रधान प्रक्रिया है। अर्थात किसी खास उद्देश्य से पठन होना चाहिए और पढ़ी गई वस्तु का सही चिंतन मनन भी आवश्यक है जिससे सही अर्थ तक पहुंचा जा सके। इससे लेखक के विचार, भाव एवं मंतव्य को सही से समझा जा सकता है।

पठन कई प्रकार से होता है। इसके चार प्रमुख प्रकार हैं - सस्वर, मौन, गहन एवं व्यापक पठन। सस्वर पठन के भी चार प्रकार होते हैं - आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, व्यक्तिगत एवं सामूहिक वाचन। सस्वर पठन का अर्थ है स्वर के साथ अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना। मौन पठन में शांत रहकर केवल पुस्तक से लिखित सामग्री पढ़कर अर्थ ग्रहण करने पर बल दिया जाता है। इसका ~~मुख्य~~ मुख्य उद्देश्य पठन में तीव्रता लाना एवं लिखित सामग्री में निहित विचारों को आत्मसात करना होता है। मौन पठन गंभीर भी हो सकता है एवं त्वरित अर्थात तेजी से भी किया जा सकता है। गहन पठन का अर्थ होता है सस्वर एवं मौन पठन की योग्यता का विकास। इसके प्रयोग से किसी विषय को गंभीरता से पढ़कर आलोचनात्मक दृष्टिकोण बनाने में सहायता मिलती है। व्यापक पठन एक प्रकार से मनोरंजन के लिए होता है; जिसमें रुचि अनुसार विद्यार्थी अधिक मात्रा में पठन करता है।

END

Scanned with CamScanner